www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भारतीय संस्कृति—मानवी संस्कृति

—श्रीराम शर्मा आचार्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

BRAHMVARCHAS SHODH SANSTHAN
SHANTIKUNJ, HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भारतीय संस्कृति–मानवी संस्कृति

अति प्राचीन काल में संस्कृति का सूर्य भारत में उगा तो पर उसका प्रकाश देश की सीमा में अवरुद्ध न रह कर समस्त संसार में फैला। ऋषि-कल्प महामनीषियों के गम्भीर अनुसंधान का भागीरथ-तप जिस महान संस्कृति की ज्ञान-गंगा को धरती पर अवतरण करने में सफल हुआ, उसे भारतीय संस्कृति कहा जाता है। इसका अर्थ उसकी परिधि अथवा उपयोगिता भारत देश की सीमा क्षेत्र में सीमित कर देना नहीं है। वह असीम है, सार्वभौम एवं सर्वजनीन है। उसे मानव संस्कृति या विश्व संस्कृति ही कहना चाहिए। निर्माताओं का चिन्तन सुविस्तृत था। वे जो सोचते थे, वह देश, काल, वर्ग की सीमाओं से बहुत आगे की बात होती थी। विश्व मानव विराट विश्व, ब्रह्म एवं वसुधैव कुटुम्बकम् से कम की बात उन्होंने कभी सोची ही नहीं। इससे कम भी कुछ हो सकता है यह उन्हें वह रुचा ही नहीं।

गङ्गा हिमालय से निकली अवश्य पर उसका कार्य क्षेत्र एवं अनुदान उस छोटे क्षेत्र में सीमाबद्ध होकर नहीं रहा। भारतीय संस्कृति के नाम से किसी को यह भ्रम नहीं होना चाहिए कि यह भारतवासी या भारतवंशी लोगों की रुचि एवं आवश्यकता को ध्यान में रखकर बनाई गई है। उसमें उन्हीं तत्वों का समावेश है जो देश काल की सीमा से ऊँची है और शाश्वत एवं सनातन समझे जा सकते हैं। सनातन धर्म शब्द का तात्पर्य उन्हीं आस्थाओं से है जो मानवी प्रगति की अविच्छिन्न अंग रही हैं और जिन्हें अपनाये रहने पर सुख-शान्ति की दिशा में क्रमशः आगे ही बढ़ते रहा जा सकता है।

नागपुरी सन्तरे, भुसावली केले, लखनऊ के खरबूजे, मथुरा के पेड़े चुनार के बर्तन आदि अनेक नामकरण उनके उद्गम स्रोत का परिचय देने भर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

के लिए किये गये हैं। किसी को यह भ्रम नहीं करना चाहिए कि वे सन्तरे, केले खरबूजे आदि उन्हीं स्थानों के निवासियों के उपयोग में आने के लिए हैं, अन्यत्र कहीं उनकी उपयोगिता नहीं। विज्ञान के क्षेत्र में अनेक महत्वपूर्ण इकाइयों और सिद्धान्तों के नाम उनके शोधकर्ताओं के नाम पर ही रखे गये हैं, पर उनकी सार्वभौमिक उपयोगिता असंदिग्ध है। वर्जीनियाँ तम्बाखू अब संसार भर में उगाई और प्रयोग लायी जाती हैं। अरबी घोड़ों की नसल संसार भर में पैदा होती और काम में लाई जाती है। भारतीय संस्कृति नाम उसके भारत में विकसित होने के कारण ही पड़ा है, वस्तुतः उसे मानवी संस्कृति नाम देना ही उचित है।

संस्कृति शब्द का अर्थ है परिष्कृति। कच्ची और अनगढ़ वस्तुओं को कुशलतापूर्वक सँभाल सुधार कर उसे आकर्षक एवं उपयोगी बनाया जाता है। इस सुधार प्रक्रिया को संस्कृति कहा जायगा।

अनगढ़ वस्तुओं को सुन्दर एवं उपयोगी बनाना भौतिक संस्कृति है। मानवी चेतना पर चढ़े जन्म-जन्मान्तरों के पशु संस्कारों के निराकरण का नाम मानवी संस्कृति है। माली अपने पेड़-पौधों को काट-छाँटकर इस स्तर का बनाता है जो उसके जंगली स्वरूप से बहुत कुछ भिन्न होते हैं। लुहार धातुओं को, मूर्तिकार पत्थर को दर्जी, कपड़ों को, शिक्षक छात्रों को, सरकस का शिक्षक भयङ्कर जानवरों को जो रूप, जो स्तर प्रदान करते हैं उसे सभ्यता कह सकते है। मनुष्य की आस्थाओं को, अमुक मान्यताओं एवं प्रथाओं के आधार पर परिष्कृत बनाने की पद्धति को संस्कृति कहा जा सकता है। अनगढ़ आदिम नर पशु को नर नारायण बना देने का श्रेय मानवी संस्कृति को ही दिया जा सकता है। इतिहास साक्षी है कि अनादि काल से भारतीय संस्कृति विश्व मानव को देवत्व की दिशा में बढ़ाने की अति महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती रही हैं। आइए, भारतीय संस्कृति की कुछ मान्यताओं का पर्यवेक्षण करें और देखें कि कोई कुशल माली उद्यान के पेड़-पौधों को सम्भाल सुधारकर उन्हें सुरम्य उद्यान के रूप में जिस तरह विकसित करता है उसी तरह मनुष्य को देवत्व की दिशा में अग्रसर करने के लिए, अपूर्णता से पूर्णता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तक पहुँचाने के लिए यह दिव्य संस्कृति उपयोगी है या नहीं ? उसमें व्यक्ति को सुविकसित और समाज को समुन्नत बनाने की क्षमता विद्यमान है या नहीं ? विश्व को अगले ही दिनों एक सार्वभौम सर्वजनीन संस्कृति की आवश्यकता पड़ेगी, वह प्रयोजन इससे सधेगा या नहीं ? मानवीय विकास अब एकता की आवश्यकता अनुभव कर रहा है । एक विश्व भाषा, एक विश्व धर्म, एक विश्व संस्कृति एक विश्व राष्ट्र बनाये बिना काम चल नहीं सकेगा । बिखराव विभाजन और विलगाव की हानियाँ क्रमशः अधिक अच्छी तरह समझी जा रही हैं । एकता की प्रतिक्रिया से जो सुखद सम्भावनाएँ प्रस्तुत हो सकती हैं उसमें सन्देह की गुंजायश रह नहीं गई है । अस्तु द्रुत गति से घूमने वाले प्रगति चक्र के विलगाव को निरस्त करके सर्वतोमुखी एकता का लक्ष्य भी अपने साथ लेकर चलना होगा । इस सार्वभौम एकता की एक अति महत्वपूर्ण कड़ी संस्कृति है । विश्व विवेक को जब इसकी खोज बीन करनी पड़े तो बना बनाया पका-पकाया सब कुछ मिल जायगा । तत्वदर्शी महामनीषियों ने एक ऐसी संस्कृति का अब से लाखों करोड़ों वर्ष पूर्व निर्माण किया था जिसे बिना देश काल, वर्ग, वर्ण का भेद किये मानवी आदर्शों की स्थापना के लिए समान रूप से अपनाया और सर्वतोमुखी लाभ उठाया जा सके ।

भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता है, विचार स्वातन्त्र्य । उसमें प्रत्येक विचार पद्धति को विकसित होने और पनपने देने की छूट है । आस्तिकवाद और नास्तिकवाद दोनों ही उसमें पनपे हैं । भक्तिवाद की विशाल परम्परा है पर चार्वाक के नास्तिकवाद को भी बहिष्कृत नहीं किया है । वेदान्त में आत्मसत्ता को परमात्मा का प्रतीक माना गया है । सांख्यकार ईश्वर का अस्तित्व मुक्त कंठ से स्वीकार करते हैं । जैन धर्म और बौद्ध धर्म में ईश्वर को स्वीकारा नहीं गया । इतने पर भी वे सब भारतीय संस्कृति के सम्मानित सदस्य हैं । चेतना के विभाजन की व्याख्या में काफी मतभेद है त्रैत, द्वैत और अद्वैत की दार्शनिक मान्यताएँ ईश्वर, जीव, प्रकृति की व्याख्याएँ अलग ढङ्ग से करती हैं । उनके मतभेद प्रत्यक्ष हैं । ईश्वर के स्वरूप कल्पना में इतनी छूट कि उसकी आकृति हर व्यक्ति अपनी रुचि के अनुरूप विनिर्मित कर सकता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है। किसी समय भारत में तैंतीस कोटि मनुष्यों की जन संख्या थी। देवताओं की संख्या भी ठीक इतनी ही थी। इसका तात्पर्य हुआ, हर मनुष्य का एक इष्टदेव। प्रथाओं, पूजा पद्धतियों, व्रतों, मान्यताओं की अनेकता और विभिन्नता सर्वविदित है।

मोटी दृष्टि से इसे विखराव माना जा सकता है पर वस्तुतः ऐसी बात है नहीं। यहाँ विचार स्वातन्त्र्य की सर्वोपरि मान्यता है और सत्य की शोध के लिए हर प्रयोग की गुंजायश है। विचार विकास को अवरुद्ध नहीं किया गया है और दार्शनिक मान्यताओं को पत्थर की लकीर भी नहीं ठहराया गया है। जो जाना जा चुका, वह अन्तिम नहीं है। बात को कई तरह से सोचा परखा जाना चाहिए। अभिव्यक्तियों और प्रयोगों पर तब तक प्रतिबन्ध नहीं होना चाहिए जब तक कि वे नैतिक और सामाजिक मर्यादाओं का उल्लंघन न करती हों।

भारतीय संस्कृति को बौद्धिक प्रजातन्त्र कह सकते हैं। प्रजातंत्र में नागरिक को लेखन, भाषण, निर्वाह, धर्म आदि के भौतिक अधिकारों की मान्यता दी गई है। विचार क्षेत्र को भी ठीक इसी तरह की मान्यता केवल भारतीय धर्म ने ही प्रदान की है। अन्य धर्म एक ही पैगम्बर और एक ही धर्म शास्त्र और एक ही विधान को मान्यता देते हैं अन्य प्रकार से सोचने वालों का दमन करते हैं। यह अधिनायकवाद हुआ। इससे विवेक और चिन्तन के विनाश की संभावनाएँ समाप्त होती हैं। भारत में वैज्ञानिक ढंग से विचार स्वातंत्र्य की छूट दी है और कहा है कि नित्य की शोध, पूर्व मान्यताओं से विपरीत जाती है तो उसे पूर्वजों की अवहेलना नहीं, चिंतन की प्रगति माना जाना चाहिए। यहाँ जन साधारण के विवेक पर विश्वास रखा गया है और स्वीकार किया गया है कि जन मानस की प्रबुद्ध चेतना स्वतः अपनी विवेक बुद्धि से काम लेगी और जो अनुपयुक्त है उसे अस्वीकार कर देगी। प्रजातंत्र में भी यही है। चुनाव में कोई भी पार्टी कुछ भी कार्य क्रम लेकर खड़ी हो हो सकती है। जन विवेक अपनी समझ से जिन्हें उपयुक्त समझता है उन्हें चुनता है। ऐसी ही उदार स्वतंत्रता भारतीय संस्कृति ने दर्शन और धर्म क्षेत्र

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में देकर बिखराव का खतरा तो उठाया है। पर मानव जाति की—इस समस्त विश्व की प्रगति के लिए विचार स्वातंत्र्य के आधार पर सत्य की शोध को चलने देने की आवश्यकता को सर्व प्रथम मान्यता देते हुए अनेकता की सहिष्णुता का परिचय दिया है।

एक उद्यान में कई तरह के पौधे और फूल उगते हैं। इस भिन्नता से बगीचे की शोभा ही बढ़ती है। यही बात विचार उद्यान के सन्दर्भ में स्वीकार की जा सकती है। इसमें अनेक प्रयोग परीक्षणों के लिए गुंजायश रहती है और सत्य को सीमा बद्ध कर देने से उत्पन्न अवरोध की हानि नहीं उठानी पड़ती। इस दृष्टिकोण के कारण नास्तिकवादी लोगों के लिए भी भारतीय संस्कृति के अंग बने रहने की छूट है जबकि उनके लिए धर्मों के द्वार बन्द हैं।

भारतीय संस्कृति की दूसरी विशेषता है। कर्मफल की मान्यता। पुनर्जन्म के सिद्धान्त में जीवन को अवाँछनीय माना गया है और मरण की उपमा वस्त्र परिवर्तन से दी गई है। कर्मफल की मान्यता नैतिकता और सामाजिकता की रक्षा के लिए नितान्त आवश्यक है। मनुष्य की चतुरता अद्भुत है। वह सामाजिक विरोध और राजदण्ड से बचने के अनेक हथकंडे अपनाकर कुकर्मरत रह सकता है। ऐसी दशा में किसी सर्वज्ञ-सर्वसमर्थ सत्ता की कर्मफल व्यवस्था का अंकुश ही उसे सदाचरण की मर्यादा में बाँधे रह सकता है। परलोक की, स्वर्ग नरक की, पुनर्जन्म की मान्यता यह समझाती है कि आज नहीं तो कल, इस जन्म में नहीं तो अगले जन्म में कर्म का फल भोगना पड़ेगा दुष्कर्म का लाभ उठाने वाले यह न सोचें कि उनकी चतुरता सदा काम देती रहेगी और वे पाप के आधार पर लाभान्वित होते रहेंगे। इसी प्रकार जिन्हें सत्कर्मों के सत्परिणाम नहीं मिल सके हैं उन्हें भी निराश होने की आवश्यकता नहीं है। अगले दिनों वे भी अदृश्य व्यवस्था के आधार पर मिल कर रहेंगे।

संचित, प्रारब्ध और क्रियमाण कर्म समयानुसार फल देते रहते हैं। इस मान्यता को अपनाने वाला न तो निर्भय होकर दुष्कर्मों पर उतारू हो सकता है और न सत्कर्मों की उपलब्धियों से निराश बन सकता है। अन्य धर्म

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जहाँ अमुक मत का अवलम्बन अथवा अमुक प्रथा प्रि या अपना लेने मात्र से ईश्वर की प्रसन्न ता और अनुग्रह की बात कहते हैं वहाँ भारतीय धर्म में कर्म-फल की मान्यता को प्रधान ता दी गयी है और दुष्कर्मों का प्रायश्चित्त करके क्षति पूर्ति करने को कहा गया है।

भारत में जब उसकी महान संस्कृति को व्यावहारिक रूप से अपनाया जाता था तब यहाँ का प्रत्येक परिवार नर रत्नों की खदान था। महामानवों का मूल्य करोड़ों रुपयों के लागत से बनने वाले उद्योग प्रतिष्ठानों की अपेक्षा कहीं अधिक होता है। कोई देश धन सम्पत्ति के आधार पर ही विकासवान नहीं मान लिया जाता उसका असली बल तो राष्ट्रीय चरित्र और महामानवों का बाहुल्य ही होता है। प्राचीन भारत में भले ही आज जितनी साधन सुविधा का—धन सम्पदा का बाहुल्य न रहा हो पर उस को साधु ब्राह्मण का आदर्श-वादी परमार्थ परायण जीवन क्रम अपनाये बिना चैन नहीं पड़ता।

योग अर्थात् परमात्मा की व्यापक सद्भाव सत्ता के प्रति आत्म—सम-र्पण तप अर्थात् आदर्शवादी रीति नीति अपनाने पर शारीरिक संयम मानसिक निग्रह एवं परिजनों के उपहास के जन्य कष्टों को सहने का साहस उत्पन्न करना। आत्मोत्कर्ष के लिए भारतीय संस्कृति में योग और तप के नाम पर अनेक विधि विधान और उपचार बताये हैं। उनका बहिरङ्ग स्वरूप भिन्न होने पर भी समय समय पर घर-घर में जन्मने वाले नर रत्नों से न केवल इस देश का गौरव बढ़ा था वरन् उनके सत्प्रयत्नों से समस्त संसार ने असीम लाभ उठाया था।

महान ऋषि मुनियों में विश्वामित्र, वशिष्ठ, जमदग्नि, कश्यप, भारद्वाज कपिल, कणाद, गौतम, जैमिन पाराशर, याज्ञवल्क्य. कात्यायन गोमिल, पिप्प-लाद, शुकदेव, शृंगी, कन्व, लोमश, धौमश, धौम्य, जरुत्कार, वैशम्पायन, जैसे सहस्त्रों महामानवों ने अपने आदर्श चरित्र और महान कर्तृत्व से विश्व-मानव की कितनी सेवा साधना की इसकी स्मरण करने मात्र से हमारी छाती गर्व से फूल उठती है।

आद्यशङ्कराचार्य, कुमारिल भट्ट, नानक, गोविन्दसिंह, ज्ञानेश्वर, तुका-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

राम, समर्थ, चैतन्य, सुर, तुलसी, मीरा, कबीर, दयानन्द, विवेकानन्द आदि की सन्त परम्परा ने युग चेतना का किस प्रकार संचार किया था यह किसी से छिपा नहीं हैं। ध्रुव प्रहलाद जैसे बालक तब घर-घर में पैदा होते थे। जनक जैसे राजा कृषिकार्य से अपना गुजारा करते थे और राज्यकोष की पाई पाई प्रजाहित में खर्च करते थे कर्ण, अशोक हर्ष, मान्धाता वाजिश्रवा, भामाशाह, जैसे उदार दानी अपनी सम्पदा का सत्प्रयोजनों के लिए समय-समय पर सर्वमेध करते रहे हैं। धर्म हेतु प्राण होमने वाले बलिदानीवीरों में गोरा, बादल जोरावर, फतेसिंह अभिमन्यु जैसे बालक तक पराक्रम दिखाते थे। रानी लक्ष्मीबाई, दुर्गावती, कर्मावती, जैसी नारियाँ तलवार लेकर अनीति से निपटने के लिए अद्भुत शौर्य दिखाती थी। परशुराम और चाणक्य जैसे ऋषियों ने अनीति ने जूझने के लिए योजना बनाई थी।

भारतीय संस्कृति ऋषि संस्कृति है, देव संस्कृति है, यह कहते हुए हमें गर्व होता है तो आवश्यकता इस बात की भी है कि हम अपनी वर्तमान मान्यताओं को विकृतियों के दलदल से निकालें और प्राचीनकाल जैसी उच्च स्थिति में पहुँचाए। यदि ऐसा सम्भव हुआ तो आज की स्थिति में भी अपनी महान सांस्कृति परम्पराओं को पुरातन युग की तरह नवयुग की पृष्ठभूमि बनाने एवं उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में प्रयुक्त किया जा सकता है। मानवी उत्कर्ष हेतु देव मानव फिर उसी रूप में पुनः अपनी भूमिका निभाने आगे आ सकते हैं जैसा कि कभी सतयुग में रहा होगा।

★

क्र०—२१५ प्र. युग निर्माण योजना, मु. युग निर्माण प्रेस, मथुरा मूल्य ४० पैसा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org